मैं हो गई गिरधर दी नि माये हो गया गिरधर मेरा

मैं हो गई गिरधर दी नि माये हो गया गिरधर मेरा
सच्चो सच्च मै केहनी आ, नो माय ना कर झगड़ा चेड़ा, बन गया मेरा

एह प्रेम दा रोग अवला है इस रोग दा रोगी झला है,
इस रोग दा न को दारु है इस रोग दा कोई थला,
मैं हो गई गिरधर दी नि माये हो गया गिरधर मेरा,

ग्वाला गोकुल दा नि माये बड़ा पसंद है मेरे,
इक दूजे नाल आसा दोवा ने लै लये लावा फेरे बन गये मेरे,
मैं हो गई गिरधर दी नि माये हो गया गिरधर मेरा,

पति मेरा अवनाशी माये लोक कहां ब्रिजवासी,
सुन सुन के लोका दिया गला आवे मैनु हासी दिल ले गये राति,
मैं हो गई गिरधर दी नि माये हो गया गिरधर मेरा,

रोम रोम विच मेरी नस नस दे विच वासियां मोहन जानी माये वासिया मोहन जानी,
कमली हो गई पगली हो गई मैं हो गई मस्तानी,
मैं हो गई गिरधर दी नि माये हो गया गिरधर मेरा,

जनम जनम दा साथ है साडा, साडी अमर कहानी,
'मधुप' हरि बिना रह नही सकदी, दासी मेरा रानी, बोले वाणी
मैं हो गई गिरधर दी नि माये हो गया गिरधर मेरा,

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)
स्वर : सर्व मोहन (टीनू सिंह)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/7346/title/main-ho-gai-girdhar-di-ni-maaye-ho-geya-girdhar-mera

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |